नयी कलीसियाएँ आरंभ करें

जो लोग बच्चो को सिखाते है पढ़े व अध्ययन करें **C7b.**

प्रार्थना: ''प्यारे परमेश्वर हमारी सभा की सहायता कीजिये जिससे हम आपकी आज्ञाओं का पालन करके आपके शिष्य बन सकें नये शिष्य वृन्द विश्वासियों का शुरू करें जहाँ कोई भी नहीं है, वहाँ आपकी पवित्र आत्मा कार्य करे।''

1. **तैयारी करे प्रार्थना और परमेश्वर के वचन के साथ जिससे नई कलीसियायें और प्रकोष्ठ बन सके।**

एक कलीसिया, ''यीशू का अनुसरण करने वाला समूह है।

मत्ती 28:18-20 में ढूंढे आप नये विश्वासियों को क्या करने को कहेंगे, जिससे सच्चे शिष्य बन सके। *(उत्तर 1 वे सब बपतिस्मा ले और यीशू की आज्ञज्ञओं को माने। सात बड़ी आज्ञाओं में वह सब कुछ साधारण रूप से जुड़ी हुई है। जो यीशू ने कहा आरम्भ में सर्वप्रथम कलीसिया ने वह सब आज्ञायें मानी जो यीशू ने कही थी। जहाँ कहीं प्रेरित जाते और शिष्य बनाते थे इस तरह से कलीसिया बढ़ती जाती थी।)*

प्रेरितो 2:37-47 में ढूंढे कि किस प्रकार विश्वासियों ने यीशू की आज्ञाओं को माना, पहली नये नियम की कलीसियया ने।

- यीशू की कौन सी आज्ञा को परतस नये विश्वासियों को मानने के लिये कहता है? *(आयत 38)*

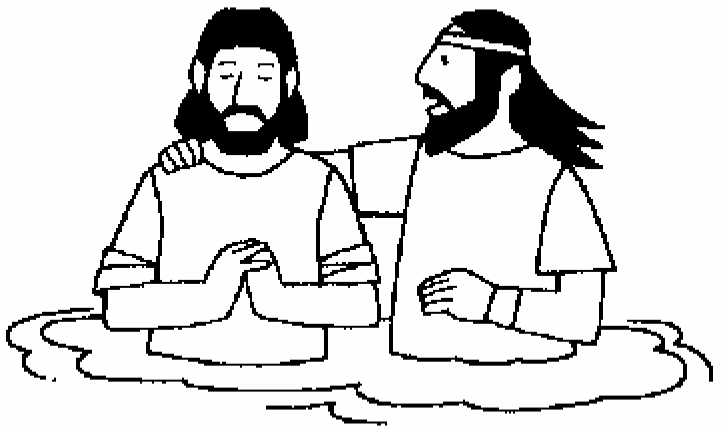

- पश्चाताप करने वाले पापी ने कौन सी आज्ञा का पालन करके विश्वासियों में अपनी गिनती की। *(आयत 4)*
- कौन सी चार क्रियायें हैं जिनको बपतिस्मा पायें विश्वासी अपने लिए करते हैं, जो यीशू ने आज्ञा देकर कहा है *(आयत 42)*
- आयत 42 में कौन सा ऐसा कार्य है (प्रेरितो से शिक्षा पाने, रोटी तोड़ना जिससे प्रभु का मृत्यु का स्मरण रहे, संगति और प्रार्थना) जो साफ साफ बताता है कि विश्वासी किस प्रकार एक दूसरे से प्रेम करते थे?
- यीशू की कौन सी मुख्य आज्ञा थी जिस पर यीशू को प्यार करने वाले चलते थे? *(आयत 44-45)*

इफिसियों 4:11-12 में कौन से लोगों को परमेश्वर ने वचन दिया है कि आपकी शिष्य वृन्द में मिला देगें?

पॉच प्रकार की सेवकार्य में से कौन से दो प्रकार के लोग दूसरों की सहायता करते हैं नई कलीसिया शुरू करने में? *(उत्तर: प्रेरित, सुसमाचार प्रचारक)*

मार्गदर्शी सिद्धांत नई समाओं और प्रकोष्ठ चलाने हेतु

नई कलीसियायें और प्रकोष्ठ शुरू आरने के लीए मार्गदर्शि सिद्धंदे

मार्गदर्शी सिद्धांद 1 वही तरीके अपनायें जो वहाँ की परिस्तिथियों के अनुकूल है। (आपको हर समय एक ही तरीके का इस्तेमाल नहीं करना) बहुत से शिष्य वृन्द निम्नलिखित तीन तरीको में से एक को अपनाते हैं। एक ही रास्ता जो आपकी परिस्थितीयों के अनुकूल हो चुने।

1. **रोपण कार्य :** एक सभा रोपण करना या छोटा गिरिजाघर रोपण की टीम बड़ी अथवा बड़े शिष्य वृन्द के द्वारा भेजी जाती है कि दूसरे क्षेत्रो में हर सभ्यता के बीच सभायें खोली जाये, जैसा लिखा है प्रेरितो के काम 13:1-3 तक
2. **उत्पत्ति** बड़ी सभा के सदस्य सुसमाचार प्रचार का कार्य पास के समुदाय में करें। नये विश्वासियो में से शिष्य बनायें ओर उस समुदाय के नेताओ को प्रशिक्षण दें। किसी को भी अपनी बड़ी सभा की संगति को नहीं छोड़ना चाहिये। प्रेरितों के काम 10 उसका उदाहरण है।
3. **छत्ते बनाना**-बहुत से विश्वासी बड़ी सभाओ को छोड़कर अपनी अलग अकेला एक शिष्य वृन्द बना लेते हैं पास में ही। यह कार्य शहरी क्षेत्रो में जहाँ आने जाने अथति परिवहन की सुविधा है बहुत जल्दी बढ़ता है, उसी समूह के बीच में परमेश्वर के वचन में इसके बारे में कोई उदाहरण नहीं है।

मार्गदर्शी सिद्धांत 2: वहीं पर कार्य करे जहाँ आपके सम्बन्ध हैं। यह अच्छा रहेगा यदि शिष्य वृन्द की स्थापना दूरी पर करे ताकि कार्यकर्त्ता वहाँ जा सके जहाँ सगे सम्बन्धी और मित्र रहते हैं।

मार्गदर्शी सिद्धांत 3: जनसंख्या के बहुत ही महत्वपूर्ण खण्ड पर दृष्टि डालें। याद रखिये यीशू ने आज्ञा दी'' धूल को झाड़ दो'' अपने पैरो से अगर लोग अपको उत्तर नहीं देते। कुछ नयी सभायें हार जाती है क्योंकि लोग मंदबुद्धि होते हैं जो गलतफहमी पैदा करते हैं। यह अच्छा है कि एक बड़ा शिष्य वृन्द बनाने के बजाए छोटे छोटे बहुत से शिष्य वृन्द बनायें जिससे सभ्यता के कारण वाद-विवाद न हो जैसा गलातिया में हुआ था। (अगर आप नहीं जानते तो पौलुस की पत्री जो गलातिया के नाम लिखी पढ़े।)

मार्गदर्शी सिद्धांत 4: जब भी विश्वासी प्रत्येक सप्ताह आराधना के लिए मिलते हैं, सुसमाचार प्रचार करते रहें। कुछ झुण्ड हार गये क्योंकि कार्यकर्त्ताओं ने सोचा कि हमारा काम खतम हो गया जो लोग आपस में इकठ्ठा होने लगे।

मार्गदर्शी सिद्धांत 5: सुनियोजित ढंग से आराधना करे, अगर समूह छोटा भी है तौभी कुछ नये शिष्य वृन्द बने रहेगें किन्तु आलसी कार्यकर्त्ता आराधना को अर्थपूर्ण नहीं बनाते।

मार्गदर्शी सिद्धांत 6: हर एक कार्यकर्त्ता कार्य बतायें। याद रहे हर एक कार्यकर्त्ता को पता होना चाहिये उसे क्या करना है। कौन क्या करेगा और क्यों नहीं करेगा सबको पता होना चाहिये। एक कार्यकर्त्ता को अपनी पत्नि के साथ सहमत होना चाहिए कि वह क्या करेगी और क्या नहीं। कुछ शिष्य वृन्द खतम हो जाते हैं क्योंकि कार्यकर्त्ताओं को ज़बरदस्ती वह काम करने को दिया जाता है, जिसे वह नहीं कर सकते, और वह छोड़ कर चले जाते हैं।

2. अपने सह कर्मियों के साथ सभी कार्यक्रम की योजना बनायें कि विश्वासियों ने सप्ताह के बीच क्या क्या करना है।

आसपास के क्षेत्रों में उपेक्षित सभाओं को नये रूप से आरम्भ करे। एक नया समूह एक सभा बन जायेगी जब विश्वासी वह सब करते है जो नये नियम में एक शिष्य वृन्द बनाने की आज्ञा दी है। इसमें यीशू की आज्ञा तथा दूसरे कार्यक्रम भी सम्मिलित है जो यीशू की आज्ञा में नहीं है।

निम्नलिखित कार्यक्रमों को जिहित कीजिये जो आपकी सभा के लिए, या नई सभाओं को जिनको आप

आरम्भ करने जा रही है ज़रूरी है। अपने सहकर्मीयों के साथ योजना बनायें कि क्या करे। और तब करे।

[] यीशू की गवाही दे और विश्वास को मज़बूत करे फिर पापो से पश्चाताप करवा कर बपतिस्मा दें।

[] नई सभाओं को शुरू करें और कार्यकत्ताओं को उपेक्षित लोगो के पास भेजे।

[] सभी विश्वासी एक दूसरे की सहायता करे ताकि आराधना में भाग ले सके तथा प्रभु भोज में भी।

[] परिवारों में प्रेम उत्पन्न करें जिससे कलीसिया की देहें मज़बूत हो तथा वैवाहिक जीवन व परिवारिक जीवन भी।

[] लोगो की तथा परिवारों की समस्याओं को सुने, एक दूसरे को माफ करने की सलाह दे और उनका समाधान करें।

[] शिष्य वृन्द की सहायता करे पवित्तता को खोजे, हर रोज नई ताजगी और पवित्र आत्मा द्वारा बदलाव लायें।

[] उदारता पूर्वक दे जिससे दूसरों की ज़रूरतें पूरी हो सकें।

[] प्रार्थना करें, बिचवई का कार्य करें, आत्मिक संग्राम में साहस पूर्वक दुष्टात्माओं का मुकाबला करें और परिवारों में रोज प्रार्थना हो उसकों मदद करना

[] लोगो के जीवन को प्रभु के वचन द्वारा चलाने की शिक्षा देना, और जो झूठी शिक्षा देते हैं उनपर ''हाय'' कहना।

[] नौसीखिये चरवाहों में जो बड़े है नेता है तथा सेवा के कार्य कर रहे हैं उन्हें प्रशिक्षण देना।

[] शिष्य वृन्दो को सुनीयोजित करना जिससे सभी विश्वासियो को सेवा करने का अवसर मिले कि वह भिन्न भिन्न आत्मिक वरदानो का प्रयोग कर सके।

[] आस-पास की सभाओ में भी इस प्रकार के क्रिया कार्यक्रम द्वारा मेल मलाप उत्पन्न करें।

3. अपने सह कर्मियों के साथ योजना बनायें जिससे आराधना को सुनियोजित किया जा सके।

प्रेरितो के काम 2:37-47 को पढ़कर कहानी बतायें कि किस प्रकार पहले नये नियम के अनुसार गिरिजा घर की शुरूआत हुई और इसके बारे में जैसे ऊपर दिये गये हैं, प्रश्न पूछे।

इफिसियों 4:11-12 पढ़कर समझायें कि परमेश्वर आपकी सभा में लोगों को जो दूसरों को सिखा सके तथा नई सभाओं को आरम्भ कर सके, लाना चाहता है, और परमेश्वर से कहे मदद करने वाले लोग ऐसे ही हो।

मत्ती 20:18-20 में लिखा है, यीशू की आज्ञा को समझायें कि जो यीशू की आज्ञाओं को मानते हैं उन्हें वह शिष्य बनाता है। आप जानकारी रखें कि आपका शिष्य वृन्द प्रभु यीशू की बुनियादी आज्ञाओं को जानता है।

छ: मार्गदर्शी सिद्धांत ऊपर दिये गये हैं

नयी कलीसियाओ को बनाने हेतु आपकी कलीसिया की जो आवश्यकता है कि वह प्रभु में कैसे बढ़े किसी भी क्रिया कलाप को समझायें जो विश्वासियों को योजना बद्ध तरीके से बढ़ने में मदद करेगा। उन कार्यकत्ताओं से जो नई कलीसियाओं को आरम्भ कर रहे हैं प्रगति का ब्योरा देने को कहें।

बच्चो से कहे कि जो कुछ उन्होंने तैयार किया है उसे दिखायें।

2 और 3 सदस्यों का एक समूह बनायें जो एक दूसरे के लिये प्रार्थना करे, नये नियम के अनुसार ऐसी योजना बनायें जिससे नई कलीसियायें प्रगति कर सकें।

(प्रेरितो के काम 13:1-3) के अनुसार जिन कार्यकर्त्ताओ को नये शिष्य वृन्द स्थापित करने का काम सौपा गया है वैसा ही काम करे जैसे अन्ताकिया में किया गया था।

प्रभु भोज आरम्भ करने के लिए, प्ररितो के काम 2:42 और 46 पढ़े। और नई कलीसियायों को यह समझायें की प्रभु भोज को आरम्भ से ही अपनी कलीसिया में अपनायें और यह वे घर पर भी कर सकते हैं।

इफिसियो 4:11-12 स्मरण करें।